D भाषाई एवं सांस्कृतिक बाधाएं (Linguistic and Cultural Barriers) - इसका तात्पर्य उन अवरोधों से है, जिसका सम्बन्ध भाषा से होता है। इसमें अस्पष्ट शब्द, अनावश्यक शब्द, गलत उच्चारण, अस्पष्ट ग्राफिक्स तथा संकेत को शामिल किया जाता है।

(i) अर्थ सम्बन्धी अवरोध (Semantic Barriers) :- वर्तमान समय में अत्याधुनिक संप्रेषण माध्यमों (ई-मेल, ई-फैक्स, ई-प्रिंट इत्यादि) पर विविध भाषाओं में सूचनाओं का प्रवाह हो रहा है, जिसे ग्रहण करने के लिए अल्प भाषी को अनुवाद करना पड़ता है। दोषपूर्ण अनुवाद होने की स्थिति में सूचना का वास्तविक अर्थ परिवर्तित हो जाता है। अतः संदेश का दोषपूर्ण अनुवाद होने से संप्रेषण में भाषाई बाधा उत्पन्न होती है।

(ii) उच्च प्रसंग या निम्न प्रसंग (High or Low Context) :- इनको क्रमशः उच्च सन्दर्भ या

निम्न संदर्भ भी कहा जा सकता है। यदि हम कोई बात करने के लिए लम्बी चौड़ी भूमिका बांधे तो उसको उच्च सन्दर्भ कहते है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भारत, सऊदी अरबिया, जापान आदि एशीया के देश है। यदि हम सीधे मुद्दे पर बात करे तथा उसको एक अनुबंध का रूप दे, तो उसे निम्न सन्दर्भ संप्रेषण कहते है। इसमे संदेश को न्यूनतम शब्दो का प्रयोग करके संप्रेषित करने की चेष्टा की जाती है। इसका उदाहरण पश्चिमी सभ्यता के देश है।

(iii) पार-सांस्कृतिक संप्रेषण (Cross-Cultural Communication) :- जब संप्रेषण में अलग अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से लोगो के संवाद मे क्या विभिन्न विभिन्नताएं और समानताएं होती है, कैसे वह आपस मे संवाद करते है और कैसे वह दूसरे संस्कृति के लोगो से संवाद करते है, आदि का अध्ययन किया जाता है, तो उसको पार-सांस्कृतिक संप्रेषण कहा जाता है।

(iv) भाषा का अल्प ज्ञान होना (Insufficient Knowledge of a Language) :- समाज में अनेक प्रकार की भाषाएं प्रचलित है। यह जरूरी नही है कि एक समाज व्यक्ति को सभी भाषाओ का ज्ञान हो, परन्तु भाषाओ का

Scanned with CamScanner

अल्प ज्ञान होने से भी संप्रेषण मे बाधा उत्पन्न होती है। वैश्वीकरण के युग में अधिक भाषाओ का ज्ञान संप्रेषण मे सहायक हो सकता है।

(v) सांस्कृतिक विभिन्नता (Cultural Differences) :- प्रभावी संप्रेषण के लिए आवश्यक है कि हम विभिन्न संस्कृतियो के मूल्यो, मान्यताओ और आकांक्षाओ आदि के रहस्यों को समझे। भारतीय संस्कृति मे रुक जाने का संदेश देने के लिए लाल रंग का प्रयोग किया जाता है लेकिन दक्षिण कोरिया मे इस उद्देश्य के लिए सफेद रंग का प्रयोग किया जाता है।

(vi) तकनीकी भाषा का ज्ञान न होना (Lack of Technical Knowledge) :- इस भाषा का प्रयोग अक्सर कार्य क्षेत्र मे किया जाता है। कई बार लोग अपनी तकनीकी भाषा मे संदेश सम्प्रेषित करते है, जो कि आम लोगो को समझ मे नही आता है; जिससे संप्रेषण के दौरान बाधा उत्पन्न होती है।

प्रभावी कक्षा संप्रेषण के सिद्धान्त (Principles of Effective Classroom Communication)

:- कक्षा संप्रेषण की प्रभावशीलता प्रमुख कारको पर निर्भर करती है- शिक्षक, छात्र, संदेश,

Scanned with CamScanner

Notes Date

शिक्षण विधि और मीडिया और अधिगम-वातावरण Learning Environment) । कक्षा संप्रेषण के सिद्धान्तो को निम्नलिखित चार शीर्षको के अन्तर्गत वर्णित किया गया है :-

1 - शिक्षको के लिए सिद्धान्त
2 - संदेश निर्माण message Design) करने के सिद्धान्त
3 - शिक्षण - विधियो और मीडिया के चयन के लिए सिद्धान्त
4 - अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने के लिए सिद्धान्त

1 ⇒ शिक्षको के लिए सिद्धान्त (Principles for teachers

(i) एक यथार्थवादी आत्म अवधारणा और आसपास के वातावरण के बारे मे संवेदनशील होना —

इसमे छात्रो की सामर्थ्य और दुर्बलताओ का विश्लेषण, उनकी क्षमता जानने का प्रयास और वास्तविकता को स्वीकार करना शामिल है।

(ii) — विषय वस्तु मे दक्षता का विकास :-

एक शिक्षक को सदैव अपने ज्ञान-वर्धन के लिए प्रयासरत रहना चाहिए । इसके लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और दूसरी संस्थाए समय समय पर लघु अवधि के पाठ्यक्रम आयोजित करती रहती है।

जिसके कारण शिक्षक का आत्मविश्वास और शिक्षण अभिक्षमता बढ़ती है। शिक्षको को नई शिक्षण तकनीको से भी अवगत करवाया जाता है।

(iii) शिक्षार्थियो को समझना :—

शिक्षक को शिक्षार्थियो के बारे मे ज्यादा जानकारी लेने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। यह जानकारी पूर्व ज्ञान, अधिगम शैली, ज्ञान सम्बन्धी शैलियो, प्रेरणा सिद्धान्तो और अभिरुचियो आदि के बारे मे हो सकती है। शिक्षक को इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि कोई दो छात्र एक जैसे नही होते है और उनके साथ एक समान व्यवहार नही किया जा सकता है।

(iv) प्रभावी संप्रेषण कौशल :—

इसके अन्तर्गत शाब्दिक एवं अशाब्दिक, मौखिक एवं लिखित सभी प्रकार की संप्रेषण कौशल आते है, जिनको सतत अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है।

(v) ~~कक्षा~~ शिक्षा-विज्ञान और छात्र केन्द्रित दृष्टिकोण —

इन दोनो के सम्मिश्रण से कक्षा संप्रेषण को प्रभावी बनाया जा सकता है।

(vi) शिक्षक का वस्तुनिष्ठ और कर्तव्यनिष्ठ होना —

छात्र इन दोनो गुणो के आधार पर शिक्षक का सम्मान करते है, इससे कक्षा मे संप्रेषण और भी प्रभावी हो जाता है। शिक्षक को अड़ियल मे लचीला रुख भी अपनाना चाहिए।

2 ⇒ संदेश नियत करने के सिद्धान्त
Principles for Message Design

(i) स्पष्ट और निर्दिष्ट उद्देश्य — इसको वर्णित करने के लिए हम SMART शब्द का प्रयोग करते है।

S - Specific (विशिष्ट)
M - Measurable (परिमेय)
A - Achievable (निष्पाद्य)
R - Realistic (यथार्थवादी)
T - Time framed (निर्धारित समय सीमा)

(ii) उचित अनुक्रम — इसमे उचित शिक्षण विधियो एव युक्तियो का प्रयोग किया जाता है

(iii) सुबोध भाषा का उपयोग

Scanned with CamScanner

Notes : Date

(iv) उचित प्रतीक या चिन्ह
(v) प्रासंगिक अभ्यास
(vi) उदाहरण एवं दृष्टान्त

3 ⇒ शिक्षण विधियों और मीडिया के चयन के लिए सिद्धान्त
(Principles for Selection of Instructional Methods and Media) —

(i) प्रासंगिक और उचित विधियों एवं मीडिया का चयन
(ii) विविध विधियों एवं मीडिया का उपयोग
(iii) अच्छी गुणवत्ता वाले मीडिया का उपयोग
(iv) शिक्षण अधिगम मे विभिन्न मीडिया का एकीकरण

4 ⇒ अनुकूल शिक्षण वातावरण बनाने के लिए सिद्धान्त (Principle for Creating Conducive Learning Environment)

(i) कक्षा मे विद्यार्थियो की संख्या सीमित रखना
(ii) कक्षा मे बैठने की उचित व्यवस्था
(iii) छात्रो के साथ सामरस्य और सामंजस्य स्थापित करना
(iv) प्रतिप्राप्ति तंत्र की स्थापना एव प्रबलन प्रदान करना
(v) नवाचार के लिए प्रेरित करना

Scanned with CamScanner